सत्र 3 एसआईक्यूई अवधारणा की समझ

सत्र	1400 बजे से 1700 बजे तक	
गतिविधियॉ	अवधि	अपेक्षित परिणाम
युवा इतिहासकारों पर विडियो	280 मिनट	एसआईक्यूई अवधारणा के अन्तर्गत कक्षा में बाल –केन्द्रित शिक्षा शास्त्र के महत्व एवं बालकों की विकासात्मक आवश्यकताओं पर इसके प्रभाव की समझ। कक्षा में गतिविधि आधारित शिक्षण एवं सीसीई प्रक्रिया की समझ।
बाल–केन्द्रित शिक्षाशास्त्र, सीसीई एवं एबीएल के सन्दर्भ में एसआईक्यूई अवधारणा पर पॉवरपाइन्ट प्रस्तुतीकरण		
नवाचारी शिक्षण पद्धति (समूह गतिविधि)– Activity Based Learning		
सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (आलेख एवं विडियो)		

3.4 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

गतिविधि का संचालन कैसे करें

विधिः पॉवरपाइन्ट प्रस्तुतिकरण एवं चर्चा

सुझाए गए चरण

- परम्परागत शिक्षण विधि की प्रमुख चुनौतियॉ तथा कमियॉ कौनसी है ? इन चुनौतियॉ तथा कमियों पर प्रतिभागियों को समूह में चर्चा करने के लिए कहें।
- क्या इन चुनौतियॉ तथा कमियॉ को दूर करने के लिए बालकेन्द्रित शिक्षण विधा किस प्रकार से उपयोगी है ? इस पर प्रतिभागियों पर समूह में चर्चा करने के लिए कहें।
- सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों को परिशिष्ट 2 (बोध द्वारा भेजी गयी सामग्री से)की प्रतियॉ वितरित कर पढ़ने के लिए देवें तथा निम्न बिन्दुओं पर चर्चा के लिए कहें।
    - परम्परागत मूल्यांकन प्रद्धति की प्रमुख कमियों पर समूह में चर्चा के लिए कहें।
    - सतत एवं व्यापक आकलन की प्रक्रिया इन कमियों को किस हद तक दूर करने में सहायक है। इस पर समूह में चर्चा के लिए कहें।
- सुगमकर्त्ता एसआईक्यूई की अवधारणा पर बना पॉवरपाइन्ट प्रस्तुतीकरण (बोध द्वारा भेजा गया पीपीटी) करें। इसके माध्यम से सीसीपी,एबीएल, सीसीई को स्पष्ट करते हुए बताऐं कि एसआईक्यूई कार्यक्रम इन तीनों अवधारणाओं का सम्मिलित रूप है।
- सुगतकर्त्ता कक्षा शिक्षण प्रक्रिया के विडियो (WWW.youtube.com/watch?v=mKc3lt87zWE) को दिखाकर कक्षा में एसआईक्यूई अन्तर्गत कक्षा में किए जाने वाले कार्यों पर प्रतिभागियों की समझ को पुख्ता करें।

चिन्तन के प्रश्न

- आप एसआईक्यूई के प्रमुख उद्देश्यों को अपने स्कूल में कैसे प्राप्त करेगें?
- मूल्यांकन की प्रक्रिया में बदलाव से कक्षा प्रक्रिया में किस प्रकार का बदलाव अपेक्षित है ?
- क्या सीसीई बच्चों के सीखने के स्तर को समझने में सहायक है ?

- देखे गए विडियो में किस प्रकार से टीएलएम का उपयोग,बच्चों के साथ सामूहिक/उपसमूह में कार्य तथा गतिविधियों में बच्चों की सहभागिता किस प्रकार से दिखाई दे रही है।
- इस विडियो में एसआईक्यूई के कौन–कौन से प्रमुख घटक दिखाई दे रहे है।

प्रमुख संदेश –

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा संचालित एसआईक्यूई कार्यक्रम में बाल केन्द्रित शिक्षण पद्धति, गतिविधि आधारित शिक्षण और सतत् एवं व्यापक ऑकलन समाहित हैं। ये सभी पक्ष परस्पर जुड़े हुए हैं।

एसआईक्यूई कार्यक्रम के उद्देश्य –

- बाल केन्द्रित शिक्षण द्वारा सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना।
- बच्चों में परीक्षा के भय को समाप्त करना।
- गतिविधि आधारित शिक्षण द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचीकर, आनन्ददायी एवं प्रभावी बनाना।
- ज्ञान को स्थायी एवं प्रभावी बनाते हुए प्राथमिक शिक्षा की नींव को मजबूत करना।
- बच्चों में सृजनात्मक एवं मौलिक चिंतन का विकास करना।
- स्तरानुसार शिक्षण योजना बनाकर शिक्षण कार्य करते हुए शैक्षिक प्रगति को नियमित रूप से दर्ज करना।
- बच्चों को पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराते हुए संज्ञानात्मक एवं व्यक्तित्व विकास के सभी पक्षों का मूल्यांकन करना।
- बालकों के अधिगम स्तर में गुणवत्ता विकास के साथ–साथ नामांकन व ठहराव में वृद्धि करना।
- बच्चों की प्रगति को अभिभावकों से साझा करना।

संस्था प्रधान की भूमिका

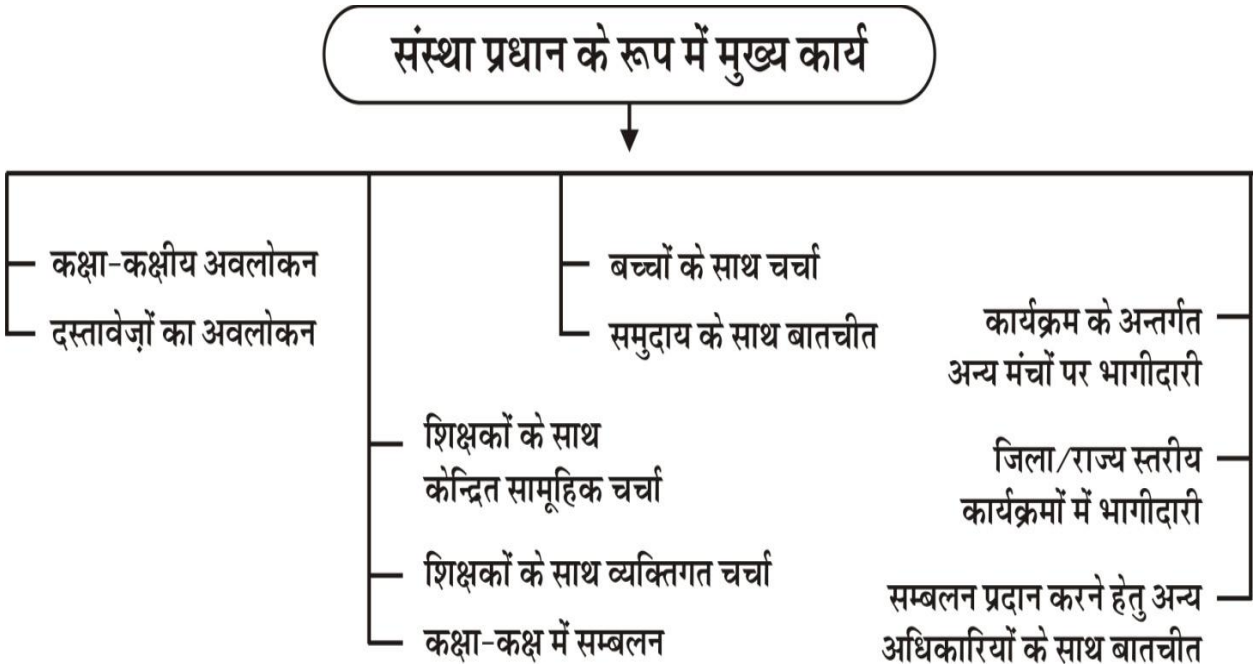

सुनिश्चित करना कि विद्यालय में कार्यक्रम का गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन हो इस हेतुः

- कक्षा अवलोकन करना व फीडबैक देना।
- विद्यालय हेतु लक्ष्य निर्धारित करना।
- प्रत्येक माह में कम से कम एक बार सभी शिक्षकों के साथ औपचारिक बैठक।

सुनिश्चित करना कि क्रियान्वयन हेतु आवश्यक सामग्री उपलब्ध है।

- कक्षा अवलोकन व फीडबैक।
- यह सुनिश्चित करना कि शिक्षक प्रत्येक माह संकुल स्तर पर आयोजित कार्यशालाओं तथा वी.सी. में भाग लें।
- शिक्षकों के प्रश्नों व चुनौतियों से प्रशिक्षण संस्थाओं को अवगत कराना।

संस्था प्रधान की विद्यालय अलग–अलग तरह की भूमिकाएँ होती हैं –

संस्था प्रधान : शिक्षक के रूप में –

- स्वयं कक्षाकक्ष में बच्चों के साथ अध्यापन कार्य करने से वे शिक्षकों को आनी वाली
- समस्याओं को अधिक नजदीकी से समझ सकते हैं।
- वे स्वयं को समन्वित शिक्षक के रूप में प्रस्तुत करें, यह प्रभावशाली नेतृत्व के लिए आवश्यक है।

संस्था प्रधान : सलाहकार रूप में –

संस्था प्रधान स्वयं की एवं शिक्षकों की क्षमता अभिवृद्धि हेतु अग्रसर रहते हैं तथा नए विचारों व ज्ञान को बाँटते हैं। यह भी आवश्यक है कि वे उस व्यवहार आदर्श रूप में प्रस्तुत करें जिसकी वे शिक्षकों से अपेक्षा करते हैं। संस्था प्रधान की समझ इतनी गहन होनी चाहिए कि वे शिक्षकों को अकादमिक मुद्दों व समस्याओं के निदान हेतु सुझाव दे सकें।.....

संस्था प्रधान : व्यवस्थापक रूप में –

विद्यालय हेतु भौतिक संसाधनों को सुनिश्चित करें व साथ ही विद्यालय की विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं को समझें व उनकी पूर्ति हेतु अग्रसर रहें।

संस्था प्रधान : नेतृत्व प्रदान/मॉनिटरिंग के रूप में –

विद्यालय के लक्ष्यों व प्रक्रियाओं को साथ मिलकर तय करना व क्रियान्वित करना संस्था प्रधान की भूमिका का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। संस्था प्रधान शिक्षकों के एक–दूसरे के मध्य सम्बन्ध, शिक्षकों व बच्चों के सम्बन्ध, समुदाय व विद्यालय के बीच अन्तःसम्बन्धों को सकारात्मक रखने की भूमिका में होते हैं। संस्था प्रधान के लिए विद्यालय व विद्यार्थियों की आवश्यकता अनुसार सुविधाएँ इकट्ठी करना व उन्हें मुहय्या कराना भी महत्त्वपूर्ण है।

संस्था प्रधान का दायित्व आवश्यक नियमों व प्रक्रियाओं को शिक्षकों द्वारा जबरन लागू कराना नहीं है, अपितु लगातार संवाद की सहायता से उन्हें उन प्रक्रियाओं की आवश्यकता समझाते हुए, क्रियान्वयन हेतु प्रोत्साहित करना है। यह रेखांकित करना भी आवश्यक है कि कुछ स्थितियों में प्रधानाचार्यों को कुछ अप्रिय कदम भी उठाने पड़ सकते हैं, लेकिन लक्ष्य विद्यालय की गुणवत्ता को सुनिश्चित करना व विद्यालय में सीखने हेतु सकारात्मक वातावरण तैयार करना होना चाहिए।

SIQE कार्यक्रम के संदर्भ में संस्था प्रधान की भूमिका

1. विद्यालय स्तर पर प्राथमिक कक्षाओं के लिए विषयवार शिक्षकों की व्यवस्था करना। गुणवत्ता से संबंधित राज्य सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुसार प्राथमिक कक्षाओं के लिए कक्षा 1 से 5 में एक शिक्षक द्वारा एक विषय का ही अध्यापन करवाया जाना सुनिश्चित करें।

2. विद्यालय में गतिविधि आधारित कार्यक्रम तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया के अनुसार कक्षा की शैक्षिक प्रक्रिया को सुनिश्चित करना। संस्था प्रधान शिक्षकों का उत्साहवर्धन करें और उन्हें समय–समय पर बताते रहें कि विद्यालय प्रशासन उनके सहयोग के लिए सदैव तत्पर है।

3. संस्था प्रधान नियमित रूप से कक्षा–प्रक्रिया एवं बच्चों की शैक्षिक प्रगति का अवलोकन करें।

4. अवलोकन के पश्चात् ही संस्था प्रधान नियमित रूप से प्रत्येक कक्षा के शिक्षक से पृथक–पृथक एवं सामूहिक संवाद करें और यह समझें की कक्षा में शिक्षण की प्रक्रिया और बच्चों के शैक्षिक स्तर में प्रगति की क्या स्थिति है। शिक्षकों को कक्षा–कक्ष में कार्य करने के दौरान किस तरह की चुनौतियाँ महसूस हो रही हैं।

5. संस्था प्रधान गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया संचालित करने का अर्थ सिर्फ फॉर्मेट भरना नहीं है। बच्चों की शैक्षिक प्रगति प्रथम एवं अंतिम उद्देश्य है। अतः कक्षा अवलोकन में पहले कक्षा–कक्ष में सीखने सिखाने की प्रक्रिया का वातावरण, बच्चों की भागीदारी तथा उनकी शैक्षिक प्रगति का अवलोकन करें और उसके बाद यह देखें की शिक्षक ने क्या तैयारी की थी? बच्चों की प्रगति को पाठ्यक्रम के अनुरूप सही दर्ज किया है या नहीं ? बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण योजना में बच्चों के शैक्षिक स्तर तथा पाठ्यस्तर के अनुरूप गतिविधियाँ शामिल की गई हैं अथवा नहीं ?

6. संस्था प्रधान प्रत्येक माह कम से कम एक बार कक्षा 1 से 5 में शिक्षण कराने वाले सभी शिक्षकों के साथ औपचारिक बैठक करें एवं कार्य प्रगति की समीक्षा करें।

7. शिक्षकों को शिक्षण कार्य के दौरान अनेक तरह की चुनौतियाँ आती हैं तथा प्रतिदिन नवीन अनुभव मिलते हैं अतः आवश्यक है कि शिक्षक को नियमित रूप से सहयोग एवं समीक्षा का अवसर मिलें। संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक शिक्षक प्रतिमाह संकुल स्तर पर होने वाली विषय कार्यशाला में भाग लें।

8. संस्था प्रधान शिक्षकों से संवाद कर यह सुनिश्चित करें कि मासिक कार्यशाला में जाने वाले शिक्षक कार्यशाला के लिए तैयारी करके जाएँ। इसके लिए शिक्षकों के पास अपने प्रश्न एवं अनुभव होने चाहिए। शिक्षक कार्यशाला में कम से कम दो या तीन बच्चों से संबंधित विषय की समस्त सामग्री लेकर जाएँ।

9. संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें की कक्षा 1 से 5 तक गतिविधि आधारित शिक्षण तथा व्यापक एवं सतत मूल्यांकन प्रक्रिया लागू करने के लिए आवश्यक सामग्री/स्टेशनरी शिक्षक के पास उपलब्ध है एवं उस सामग्री का समुचित उपयोग कक्षा में किया जा रहा है।

10. संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि यदि उनके विद्यालय के कोई शिक्षक या शिक्षिका संकुल स्तर पर होने वाली विषयवार कार्यशाला में दक्ष प्रशिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं तो वो नियमित रूप से प्रशिक्षक का कार्य करने के लिए उपलब्ध हों। जब वे प्रशिक्षण के कार्य के लिए बाहर हों तो विद्यालय के अन्य शिक्षक उनकी कक्षाओं में शिक्षण का कार्य तय योजनानुसार करवा रहे हों।

11. संस्था प्रधान शिक्षकों के प्रश्नों एवं चुनौतियों से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान को समय–समय पर लिखित में अवगत कराएँ।

12. विद्यालय में गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के संचालन में आने वाली प्रशासनिक चुनौतियों के संबंध में जिला स्तरीय समन्वयन समिति को लिखित में अवगत कराना सुनिश्चित करें।

13. संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि यदि उनके विद्यालय में किसी शिक्षक द्वारा गतिविधि आधारित शिक्षण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया का श्रेष्ठ संचालन किया जा रहा है एवं बच्चों का शैक्षिक स्तर कक्षा स्तर के अनुरूप है तो उस शिक्षक के बारे में अधिक से अधिक विद्यालयों को जानकारी हो।